JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आचार्य सायण की व्याख्या पद्धति

मनीष कुमार
शोध-छात्र
संस्कृत-विभाग, दिल्लीविश्वविद्यालय
दिल्ली-110007

शोध सारांश

संस्कृत वाङ्मय में वेदों का स्थान सर्वोपरि है। वेद, धर्म निरुपण में स्वतन्त्र रूप से प्रमाण हैं। इस भूमण्डल पर उपलब्ध विविध भाषाओं में प्राचीन ग्रंथो में वे सभी से प्राचीन हैं। इस प्रकार सभी विद्वान इस तथ्य को अंगीकार करते हैं। "विद्यन्ते धर्मादयः पुरुषार्था यैस्ते वेदाः" इस प्रकार बहुत सी ऋचा प्रातिशाख्यों में वेद शब्द के अर्थ को अभिहित किया गया है। वेद शब्द विद धातु से घञ् प्रत्यय करके बना है, जिसका अर्थ है - ज्ञान। विदन्ति जानन्ति, विन्दंते लभन्ते, विन्दंते विचारयन्ती सर्वे मनुजाः सत्यविद्यां यैर्येषु वा, विद्यन्ते भवन्ति, वेद्यते ज्ञायते अनेनेति वेदः। विद्वान्सश्च भवन्ति ते वेदाः।[1] वेदार्थ के ज्ञान के लिए यास्काचार्य ने सर्वोत्कृष्ट निरुक्त शास्त्र की रचना की। आचार्य यास्क वेद को अपौरुषेय मानते हैं।[2] तथा आचार्य सायण वेद को इष्ट प्राप्ति तथा अनिष्ट का परिहारक स्वीकारते हैं।[3] आचार्य सायण प्राचीन भारतीय वैदिक पण्डितों में मूर्धन्य विद्वान् थे। वह वैदिक परम्परा के मर्मज्ञ, प्रतिभासम्पन्न विश्रुत थे। वेद के जिज्ञासुओं के लिए उनका भाष्य वेदार्थ को खोलने के लिए चाबी ही है। जिससे वे सब वेद विमर्श में प्रवेश के लिए सक्षम होंगे। सम्पूर्ण भारतवर्ष में कोई भी उनके जैसा वेद शास्त्रज्ञ सम्पन्न विपश्चित नहीं आया। आज भी श्रुति गोचर के लिए सायण आचार्य का नाम है। प्रस्तुत शोधपत्र को चार भागों में बाँटा गया है। (क) आचार्य सायण का जीवन वृत्त और स्थिति काल। (ख) आचार्य सायण की कृतियाँ। (ग) आचार्य सायण के वैदिक अर्थों का अनुशीलन। (घ) आचार्य सायण की भाष्य शैली।

संकेत शब्द

आचार्य सायण की व्याख्या पद्धति, सायण, वेद, संस्कृत, वेद भाष्य ।

सम्पूर्ण शोध पत्र

(क) आचार्य सायण का जीवन वृत्त और स्थिति काल -

सायण द्वारा स्वयं लिखित ग्रंथों के आदि में अपने वंश का परिचय दिया गया है।

आचार्य सायण स्वयं "अस्माकं आन्ध्राणाम्" लिखकर अपने स्थान का का उल्लेख किया है। यह जनपद 'तुंगभद्रा' नामक नदी के किनारे पर स्थित है। इनका मूल नाम 'सायण्णा' भी कर्नाटक शैली में ही रखा गया प्रतीत होता है।

वंश परिचय में पिता- मायण, माता- श्रीमती, अग्रज सहोदर- माधव, अनुज सहोदर-भोगनाथ, गोत्र- भारद्वाज प्राप्त होता है।[4]

आचार्य सायण की शाखा तैत्तरीय कृष्णयजुर्वेद तथा सूत्र बोधायन था।[5]

एवं इनके तीन पुत्र थे - कम्पण, मायण और शिंगण।[6]

सायण के गुरु - श्री विद्यातीर्थ, श्री भारतीतीर्थ तथा श्री कंठ।[7]

परमात्मतीर्थ के शिष्य 'विद्यातीर्थ' तपः पूत सन्यासी थे। इन्होंने 'रुद्रप्रश्नभष्य' की रचना की थी। श्री विद्यातीर्थ का स्मरण आचार्य सायण ने महेश्वर से तुलना करते हुए किया है।[8]

आचार्य सायण के आविर्भाव काल विवाद का विषय नहीं है। क्यूंकी सायण के द्वारा ही अपने आश्रय दाताओं राजाओं का उल्लेख किया गया है।[9]

आचार्य सायण की मृत्यु विक्रम संवत. 1444, ईस्वी सन. 1387 में (72) वर्ष की अवस्था में हुई थी।[10]

इस प्रकार 14वीं शताब्दी उत्तरार्ध ही इनका स्थिति काल इस प्रकार सम्भावना की जाती है।

(ख) आचार्य सायण की कृतियाँ -

सायण आचार्य ने बहुत ग्रंथों की रचना की, इनके भाष्य ग्रन्थ इनकी ही कीर्ति को प्रख्यापित करते हैं।

बुक्क महीपति के द्वारा माधव आचार्य से वेदभाष्य तथा अन्य ग्रंथों की रचना के लिए प्रार्थना की गयी परन्तु माधव ने उस प्रार्थना को किसी कार्यवश स्वीकार नहीं किया।

माधव द्वारा निवेदन किया गया, हे राजन ! मेरा अनुज सायण सारे शास्त्रों का वेत्ता है। वह वेदार्थतत्वज्ञ और वैदिक सम्प्रदाय का यथार्थ तौर से जानने वाला है। इसलिए उनको ही वेदों की व्याख्यातृत्व रूप में

नियोजन करे आप। माधव आचार्य का वचन सुनकर महीपति बुक्क सायण आचर्य को वेदार्थ प्रकाशन के लिए आदेश देते हैं। इसी कारण से वैसे अपने ग्रंथों में 'माधवीया' नाम उल्लेख कृतज्ञताज्ञापन के लिए ही करते हैं।[11]

सायण आचार्य ने 5 संहिताओं के भाष्य तथा 13 ब्राह्मणों एवं आरण्यकों की व्याख्या लिखि।[12]

इनका नाम इस प्रकार है-

तैत्तिरीय संहिता शाखा (कृष्ण यजुर्वेद),

तैतरीय ब्राह्मण,

तैतरीय आरण्यक,

ऐतरेय ब्राह्मण,

ऐतरेय आरण्यक,

ऋग्वेद संहिता शाखा-शाकल,

सामवेद संहिता शाखा-कौथुम,

ताण्ड्य ब्राह्मण,

पंचविंश ब्राह्मण,

षड्विंश ब्राह्मण,

सामविधान ब्राह्मण,

आर्षेय ब्राह्मण,

देवताध्याय ब्राह्मण,

उपनिषद ब्राह्मण,

संहितोपनिषद ब्राह्मण ,

वंश ब्राह्मण,

शतपथ ब्राह्मण -शुक्लयजुर्वेद,

काण्व संहिता शाखा-शुक्लयजुर्वेद,

अथर्ववेद संहिता शाखा-शौनक।

इस प्रकार क्रम से आचार्य सायण ने भाष्य किया।[13]

आचार्य सायण के अन्य ग्रन्थ -

सुभाषित सुधानिधि,

प्रायश्चित सुधानिधि,

अलंकार सुधानिधि,

धातुवृत्ति,

पुरुषार्थ सुधानिधि,
वेदभाष्याणि,
आयुर्वेद सुधानिधि,
यज्ञातंत्र सुधानिधि।[14]

सायण ने प्रथम तैतरीयसंहिता का भाष्य किया, यहाँ अपनी शाखा ही कारण नहीं अपितु अन्य कारण भी रहे होंगें। उन्होंने अध्वर्यु का कार्य महत्वपूर्ण माना तथा यजुर्वेद की सर्वाधिक उपयोगित्व को भी स्वीकारा।[15]

यजुर्वेद की बहुत शाखाओं में तैत्तरीय शाखा ही सायण की अपनी है, इसलिए ही उनकी प्रथम व्याख्या की। तैत्तरीयसंहिता के व्याख्यान के अवसान में उससे सम्बंधित तैत्तरीयब्राह्मण और तैत्तरीय आरण्यक की व्यख्या की थी। सायण के द्वारा स्वयं प्रतिपादित है।[16]

सायण द्वारा अपने ऋग्वेदभाष्य का नाम 'वेदार्थप्रकाश' इस प्रकार लिखा तथा इस भाष्य को गुरु विद्यातीर्थ के लिए समर्पित किया।[17]

सायण ने श्री बुक्क नरपति के पुत्र महाराज हरिहर का उल्लेख किया हैं अथर्ववेद संहिता के भाष्य अवतरणिका में। निश्च्य ही शतपथब्राह्मण के भाष्य आरम्भ में उनने महाराज हरिहर की चर्चा की है।

निश्चित प्रमाण अनुसार ज्ञात होता है कि दोनों भाष्य अथर्ववेद भाष्य तथा शतपथब्राह्मण का भाष्य के रचना काल में सायण हरिहर के प्रधान मंत्री थे।

इस प्रकार दीर्घ काल पर्यन्त सायणाचार्य ने वेदों के भाष्यों को रचा।

(घ) सायण आचार्य के वैदिक अर्थों का अनुशीलन -

श्री सायण आचार्य द्वारा जो वेद भाष्य रचे गए वे आज भी संपूर्ण रूप द्वारा जिज्ञासुओं का वेदार्थ परिचय के लिए उपलब्ध है।

इनके द्वारा विरचित भाष्यों में प्राचीन परम्परा निरुक्त आदि का ही साधु संरक्षण को न केवल समुपलब्ध किया है अपितु पुराण, इतिहास, स्मृति ग्रंथों, सूत्र ग्रंथों, महाभाष्य, श्रीमद भगवद्गीता, तंत्र ग्रंथों और अमरकोश आदि को भी प्रसंग अनुसार प्राचीन आचार्य सम्मत व्याख्यानों को भी हम मंत्रो में पाते हैं।[18]

इनके द्वारा आख्यानों का उल्लेख किया गया है।[19]

बृहद्देवता अनुसार कथा भी दी गयी है।[20]

कहीं अन्य प्रमाण के आधार पर आख्यान को निर्दिष्ट किया है।[21]

मंत्र अर्थ के प्रतिपादन में 'यद्वा ' यह कहकर सायण द्वारा वैकल्पिक अर्थों को भी प्रस्तुत किया गया है। संपूर्ण मंत्र का दो अर्थ भाष्यों में बहुत जगह दीखते हैं।[22]

कुछ मंत्रों में तीन अर्थ प्रस्तुत किये हैं, 'कालोऽश्वः' इस मंत्र का अश्व परक, परमेश्वर परक और आदित्य परक व्याख्यान किया हैं।[23]

एवं अथर्ववेद का 'वज्रं कृणुध्वम्' इस मंत्र का इन्द्रिय परक, ऋत्विक परक और योद्धा परक व्याख्यान विधान किया है।[24]

यज्ञकर्मों के लक्ष्य द्वारा आचार्य द्वारा भाष्यों की रचना विहित है। "यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" इस प्रकार उनकी दृढ धारणा है।[25]

याज्ञिक कर्मकाण्ड सम्बन्ध में मंत्रों में जन, मानुष इत्यादि के शब्दों का अर्थ प्रायशः यजमान आदि ही प्रदान करते हैं।[26]

दार्शनिक सूक्तों का अर्थ सायणाचार्य द्वारा विशदता से दार्शनिक दृष्टि से ढूँढा गया है, भाष्यों में यथा अवसर उपस्थापित किया है।[27]

'वेनस्तत् पश्यत् परमं गुहा यद् यत्र विश्व भवत्येकरूपम्' इस मंत्र के भाष्य में सायण द्वारा ब्रह्मसूत्र का आश्रय लेकर पूर्ण रूप से आध्यात्मिक अर्थ वैकल्पिक रूप से प्रकट करते हैं।[28]

प्रस्तुत मन्त्र में आचार्य सायण अधिभौतिक अर्थ करते दृष्ट होते हैं - हे कुमार ! जो तुम धान्य का अदन करते हो तथा गोधान पयः सदृश सारभूत पिष्टमय अन्न अथवा पायोमिश्रित व्रीहि आदि रूप धान पीते हो और जो सुख से भक्षणीय योग्य है तथा जो अत्यंत कटु -तिक्त होने से न खाने योग्य वस्तु हैं अथवा कठोर वस्तु हैं वह सब जो खाते हो, उस अन्न को निर्विष अर्थात अमृत करता हूँ।[29]

इस मन्त्र में आचार्य सायण आधिदैविक अर्थ करते हुए दृष्ट होते हैं -

कश्यप नाम सूर्य की सात किरणें (आरोग, भ्राज, पटर, पतंग, स्वर्ण, ज्योतिष्मान, और विभास) समुद्रस्थ तथा अंतरिक्ष में होने वाले धारा रूप जलों को द्युलोक से गिराती है अर्थात वर्षा करती हैं।[30]

आचार्य सायण प्रत्येक मंत्र का अर्थ तीन प्रकार मानते हैं।[31]

आचार्य सायण ने त्रिविध प्रक्रिया की घोषणा वेदभाष्यभूमिका में कहीं नहीं की है, किन्तु वेदभाष्य में त्रिविध प्रक्रिया को अवश्य अपनाया है, यह सुस्पष्ट हो जाता है।

(ग) आचार्य सायण की भाष्य शैली -

आचार्य सायण ने अपने भाष्य शैली में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के भाष्य में उन्होंने शब्द के अन्वय के साथ अपना भाष्य प्रारम्भ किया और प्रत्येक शब्द, जो प्रथम बार मिला, उसकी पूर्ण निष्पत्ति इत्यादि के सहित व्याख्या की तथा शब्द की धातु,

प्रत्यय, रूप, स्वर इत्यादि की विवेचना के साथ -साथ उन्होंने वेद, वेदाङ्ग, इतिहास, पुराण, स्मृति आदि से भी आवश्यक सामग्री का अवगाहन कर अपने भाष्य में उसको प्रस्तुत किया।[32]

आचार्य सायण भी पूर्ववर्ति आचार्यों के अनुसार धातुओं की अनेकार्थकता को स्वीकारा है।[33]

आचार्य सायण ने 'मन्वते ' पद का अर्थ 'अवबुध्यते' किया है अथवा धातुओं के अनेकार्थक होने के कारण 'क्षमते' यह अर्थ भी किया है।[34]

इस विषय में उनकी 'माधवीय धातुवृत्ति ' ग्रन्थ पठनीय है।

आचार्य सायण ने स्वकीय भूमिका में बतलाया है कि शरीर की शोभा अलंकारों से होती है एवं अध्वर्यु द्वारा यज्ञशरीर का निर्माण तथा 'स्तोत्र' और 'शस्त्र' द्वारा उसके अलंकृत होने का वर्णन किया गया है।[35]

आचार्य सायण ने ऋषि, देवता और छंन्दोज्ञान के प्रकरण में लिखा है, जो मंत्र अर्थ के स्मरण के लिए प्रयुक्त होते हैं उनमे ऋषि आदि को अवश्य जानना चाहिए। इसलिए छांदोग लोग ऋष्यादि के न जानने पर बाधा का कथन करके उसको जानने की विधि बतलाते हैं, 'जो बिना ऋषि, देवता, छंद को जाने ब्राह्मण और मन्त्र के द्वारा यज्ञ कराता है अथवा पढता है वह स्थाणुत्व को प्राप्त करता है अथवा गर्त को प्राप्त करता है।[36] इसलिए इनको अवश्य जानना चाहिए।

सन्दर्भ सूची -

1. द्रष्टव्य - ऋग्वेदभाष्यभूमिका

2. पुरुषविद्यानित्यत्वात् कर्मसम्पत्तिर्मन्त्रो वेदे। (निरुक्त 1.2)

3. इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः। (सायण: तैत्तिरीय संहिताभाष्यभूमिका)

4. स्वस्ति श्री श्रीमायीजननी पिता तव मुनिबोधायनो मायणो-ष्ठो भूष्णुरनुजः श्री भोगनाथः कविः,स्वामी संगमभूपति-पूज्यश्रीकण्ठनाथो गुरुः । भारद्वाजकुलेशसायणगुणैस्तव। (एपिग्राफिका इण्डिका भाग-3 पृष्ठ 118)

5. यस्य बौधायनं सूत्रं शाखा यस्य च याजुषी।
भारद्वाजकुलं यस्य सर्वज्ञः स हि माधवः।।
श्रीमती जननी यस्य सुकीर्तिमायणः पिता।
सायणो भोगनाथश्च मनोबुद्धी सहोदरौ।।

6. द्रष्टव्य- अलंकार सुधानिधि

7. सोऽहं प्राप्य विवेकतीर्थपदवीमाम्नायतीर्थे परम्, मज्जन सज्जनसंगतीर्थनिपुणः सद्वृत्ततेर्थं श्रयन्।
लब्धामाकलयन् प्रभावहलहरीं श्री 'भारतीतीर्थतो,विद्यातीर्थमुपाश्रयन् ह्रदि भजे श्रीकण्ठमव्याहतम्।।
कालनिर्णयः(आचार्य माधव)

8. यस्य निःस्वसितं वेदो यो वेदेभ्योऽखिलं जगत्।
निर्ममे तमहं वन्दे विद्यातीर्थ महेश्वरः।।(शतपथ ब्राह्मण पुष्पिका)

9. इति श्रीमद्राजाधिराजपरमेश्वरवैदिकमार्गप्रवर्तकश्रीवीरबुक्कभूपालसाम्राज्यधुरन्धरेण सायणाचार्येण विरचिते माधवीये वेदार्थ प्रकाशे। (ऋक्संहिताभाष्ये प्रथमाष्टके प्रथमोऽध्यायः समाप्तः)

10. कैटेलोगस कैटेलोगोरम बृहत्सूची पृ• 711 (डा. आफ्रेख्त)

11. तत्कटाक्षेण तद्रूपं दधर् बुक्कमहीपतिः।
आदिशन्माधवाचार्यं वेदार्थस्य प्रकाशने।।
स प्राह नृपतिं "राजन्! सायणार्यो ममानुजः।
सर्वं वेत्त्येष वेदानां व्याख्यातृत्वे नियुज्यताम्"।।
इत्युक्तो माधवार्येण वीरबुक्कमहीपतिः।
अन्वशात् सायणाचार्य वेदार्थस्य प्रकाशने।।
ये पूर्वोत्तरमीमांसे ते व्याख्यायातिसंग्रहात्।
कृपालुः सायणाचार्यो वेदार्थं वक्तुमुद्यतः।।(तैत्तिरीय संहिता भाष्योपक्रमणिका)

12. वेदभाष्य भूमिकासंग्रह पृ• 32

13. Thesis ;अथर्ववेद के सायण भाष्य की समीक्षा : जितेन्द्र कुमार 1994 D.U. पृ• 81

14. वेदभाष्यभूमिका संग्रह : बलदेव उपाध्याय , प्रस्तावना पृ• 11-13

15. एवं सति अध्वर्युसम्बन्धिनि यजुर्वेदे निष्पन्नं यज्ञशरीरमुपजीव्य.. इत्युपजीव्यस्य यजुर्वेदस्य प्रथमतो व्याख्यानं युक्तम्। (ऋग्वेदभाष्योपक्रमणिका, सायणाचार्य)

16. व्याख्याता सुखबोधाय तैत्तिरीयसंहिता।
तद् ब्राह्मणं व्याकरिष्ये सुखेनार्थविबुद्धये।।

17. वेदार्थस्य प्रकाशने तमो हार्दं निवारयन्।
पुमर्थांश्चतुरो देयाद् विद्यातीर्थमहेश्वरः।।(ऋग्वेदभाष्ये प्रथमाष्टके प्रथमाध्यायस्य समाप्तौ)

18. मनु स्मृतिः (ऋ• 1/121/5), मुण्डकोपनिषत् (ऋ• 1/140/4), याज्ञवल्क्य स्मृति (अथर्व• 7/13/1), तन्त्रसारः (अथर्व• 19/10/10), तन्त्रिकाः (अथर्व• 12/1/18), अमरकोश (अथर्व• 6/98/3), महाभारत (अथर्व• 19/53/1), मनु स्मृति (अथर्व• 3/13/5), ब्रह्मसूत्र (अथर्व• 7
2/1/1), श्रीमद्भगवद्गीता (अथर्व• 7/5/1) (2/1/4)।

19. ऋ• सायण भाष्य (1/71/3), (1/125/1)

20. बृहद्देवतायां यदुक्तं तदिह लिख्यते ' वरुणस्य गृहान् रात्रौ वसिष्ठः स्वप्नमाचरन् ...'। (ऋ• सायण भाष्य 7/55; बृहद्देवता 6/11-13)

21. अत्र शाकटायनिन इतिहासमाचक्षते। (ऋ• सायण भाष्य 1/84/13)

22. ऋ• (1/62/1), (10/129/3),(10/149/3), अथर्व•(2/1/1),(7/1/1),(7/3/1),(11/6/21)

23. अथर्व•(7/5/1), (19/53/1)

24. अथर्व•(19/58/4)

25. शतपथ ब्राह्मण 1/7/1/5; तैत्तिरीय संहिता 3/2/1/4

26. मानुषेषु यजमानेषु (ऋ• सायण भाष्य 1/60/4),
मनोरपत्ये यजमानस्वरूपायां प्रजायाम् (तत्रैव 1/68/8),
मनुषः मनुष्यस्य अध्वर्योः (तत्रैव 1/128/1),
मानुषे मनुष्यस्य यजमानस्य (तत्रैव 1/68/8),
जनान् यजमानान् (तत्रैव 1/68/8),

27. द्रष्टव्य- ऋ• सायण भाष्य 10/10; 10/129

28. अथर्व• सायण भाष्य (2/1/1)

29. अथर्व• सायण भाष्य (8/2/19)

30. अथर्व• सायण भाष्य (7/106/1)

31. सर्वदर्शनेषु च सर्वे मन्त्राः योजनीयाः। कुतः? स्वयमेव भाष्यकारेण सर्वमन्त्राणां त्रिप्रकारस्य विषयस्य प्रदर्शनाय अर्थं वाचः पुष्पफलमाह इति यज्ञादीनां पुष्पफलत्वेन प्रतिज्ञानात् । द्रष्टव्य- निरुक्त स्कन्धटीका भाग 3 पृ• 36 ।।

32. निगमालोक पृ• 32

33. मन्वतेऽवबुध्यते, यद्वा धातूनामनेकार्थत्वात् क्षमते इत्यर्थः। (ऋग्वेदभाष्य सायण 10/12/6),
बह्वर्था अपि धातवो भवन्ति। (महाभाष्य 1/3/1)

34. ऋग्वेदभाष्य द्रष्टव्य पृ• 178

35. निर्मिमीते क्रियासङ्घैरध्वर्युर्यज्ञियं वपुः।
तदलंकुरुते होता ब्रह्मोद्गतेत्यमी त्रयः।। (सामवेदभाष्यभूमिका श्लोक 13,)

36. द्रष्टव्य - काण्वशाखाभाष्यभूमिका (सायण)

सहायक ग्रन्थ -

1. वेदव्याख्यापध्दतयः, शशि तिवारी, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, 2014

2.जितेन्द्र कुमार, अथर्ववेद के सायण भाष्य की समीक्षा, पीएच.डी शोध-प्रबन्ध, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1994

3. वेद भाष्यभूमिकासंग्रह, उपाध्याय बलदेव, चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी, 2nd edition, विक्रम सम्वत, 2042

4. आचार्य सायण और स्वामी दयानन्द सरस्वती की वेदभाष्य-भूमिकाएँ, डॉ. रामप्रकाश वर्णी, परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली 2005

5. मनीष कुमार, '***प्रमुख ऋग्वैदिक संवाद-सूक्तों की समसामयिक प्रासंगिकता'***, एम. फिल., दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2022.